राजलदेसर, 5 फरवरी। ''साधु और गृहस्थ के जीवन में कुछ अन्तर होना चाहिए अर्थात् साधु का जीवन कुछ विशिष्ट होना चाहिए। कुछ–कुछ गृहस्थ ऐसे मिलते है जिनका जीवन भिक्षुओं से ज्यादा विशिष्ट होता है परन्तु फिर भी साधु के जीवन और गृहस्थ के जीवन में कुछ अन्तर रहे। सामान्य आदमी से उसका व्यवहार भिन्न होना चाहिए। साधु को अनासक्ति और संयम के साथ व्यवहार करना चाहिए। साधु की क्रिया, संयम और साधना से युक्त होनी चाहिए।'' –उक्त उद्गार राष्ट्र सन्त आचार्य महाश्रमण ने अर्हत् वा"मय के महत्वपूर्ण आगम 'आयारो' के सूत्र का विवेचन करते हुए धर्मसभा में व्यक्त किए।

उन्होंने कहा – जिस किसी भी क्षेत्र में आदमी उतरे उसमें उसके संकल्प, निष्ठा मजबूत होने चाहिए। तभी सफलता मिल सकती है। जिसमें दक्षता होती है, कार्य कौशलता होती है, उसे सफलता मिलती है।

आचार्य महाश्रमण ने कहा – जो उद्योगशील, पुरुषार्थी होता है वह विद्या को प्राप्त कर सकता है, विद्या में पारंगत होता है। आलस्य एक ऐसा महान शत्रु है जो मनुष्य के शरीर में रहता है। आलस्य और प्रमाद करके मनुष्य दुःखी बन जाता है। श्रम के समान कोई बन्धु नहीं जिसे प्राप्त करके मनुष्य कभी दुःखी नहीं होता है।

उन्होंने कहा – आदमी को अपने जीवन को उपयोगी बनाना चाहिए तभी उसका मूल्य बढता है, वरना उसका कोई मूल्य नहीं। दक्षता जिसमें होती है वही व्यवस्थापक होता है तभी व्यवस्था ठीक बैठ सकती है।

व्यक्ति को दूरगामी दृष्टि रखते हुए तात्कालिकता की बजाए भविष्य के परिणाम को देखकर कार्य करना चाहिए। जिस कार्य को करने से लाभ नहीं या क्षणिक (थोड़ा) लाभ हो, ऐसे कार्य को करने से बचना चाहिए और यदि वर्तमान में किसी का लाभ कम हो और भविष्य में उसका परिणाम ज्यादा सुखद हो, ऐसे परिणाम वाले कार्य करना चाहिए।

इस अवसर पर साध्वी ललितरेखा ने अपना शोध ग्रन्थ ''जैन दर्शन में स्वप्न मनोविज्ञान'' आचार्य प्रवर को समर्पित करते हुए कहा – मैनें इस ग्रन्थ को मनोविज्ञान के साथ व्यवस्थित करने का प्रयास किया है। मनोविज्ञान का प्रभाव ज्यादा शक्तिशाली और असरकारक होता है। इस पर आचार्य प्रवर ने कहा – शोध में सारपूर्ण बात कही जाए तभी शोध का महत्व होता है। इनका श्रम निष्पत्ति को प्राप्त होता हो।

147वें मर्यादा महोत्सव का समय विशेष रूप से स्वास्थ्य शिविरों के नाम रहा। आज तेरापंथ युवक परिषद् के तत्वावधान में पुनमचन्द हीरावत असाध्य रोग सेवा केन्द्र जो चल रहा है के डॉक्टरों का श्रीजैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, राजलदेसर के अध्यक्ष हुणतमल नाहर, ते. यु. प. अध्यक्ष रजत बैद, मंत्री सुशील घोषल, करणसिंह विनायकिया, रायचन्द घोषल व जितेन्द्र घोषल ने सम्मान किया। वहीं तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम के शैलबी हॉस्पिटल के डॉक्टरों का एक दल अस्थि रोगों का शिविर लगाने हेतु आज राजलदेसर पहुँचा। कार्यक्रम में शैलबी हास्पिटल के डॉ. मारोठी, हॉम्योपैथिक चिकित्सक धनराज हीरावत, मुनि दिनकर आदि ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी। इस अवसर पर भीनासर एवं श्रीडूंगरगढ से समागत साध्वियों ने गुरुदर्शन किए। कार्यक्रम का संचालन मुनि मोहजीत कुमार ने किया।

अध्यात्म समवसरण

अध्यात्म समवसरण